राज्य, वाचाएँ और पुराने नियम का कैनन

अध्ययन निर्देशिका

अध्याय एक

पुराने नियम का अध्ययन क्यों?

Biblical Education. For the World. For Free.

For videos, manuscripts, and other resources, visit Third Millennium Ministries at thirdmill.org.

विषय-वस्तु

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका 3

नोट्स 4

I. परिचय (0:26) 4

II. हम से दूरी (3:16) 4

A. कारण (4:45) 4
1. जैविक प्रेरणा (6:17) 4
2. दिव्य समायोजन (9:47) 5

B. प्रकार (12:40) 6
1. धर्मविज्ञानी (14:09) 6
2. सांस्कृतिक (16:55) 6
3. व्यक्तिगत (20:16) 7

III. हमारे लिए प्रासंगिकता (23:13) 7

A. यीशु की शिक्षाएँ (24:38) 8
1. नकारात्मक टिप्पणियाँ (25:02) 8
2. सकारात्मक पुष्टियाँ (37:56) 9

B. पौलुस की शिक्षाएँ (41:57) 9
1. नकारात्मक टिप्पणियाँ (42:27) 9
2. सकारात्मक पुष्टियाँ (47:15) 10

IV. हमारे लिए प्रयोग (49:54) 11

A. चुनौती (51:26) 11

B. संबंध (57:12) 12
1. वही परमेश्वर (58:34) 12
2. वही संसार (1:06:58) 14
3. उसी प्रकार के लोग (1:10:01) 15

C. विकास (1:16:27) 17
1. युगीय (1:16:57) 17
2. सांस्कृतिक (1:23:00) 19
3. निजी/व्यक्तिगत (1:24:03) 19

V. उपसंहार (1:25:40) 19

पुनर्समीक्षा के प्रश्न 20

उपयोग के प्रश्न 24

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

इस अध्याय को कैसे इस्तेमाल करें और अध्ययन निर्देशिका

इस अध्ययन निर्देशिका को इसके साथ जुड़े वीडियो अध्याय के साथ इस्तेमाल करने के लिए तैयार किया गया है। यदि आपके पास वीडियो नहीं है तो भी यह अध्याय के ऑडियो और/या लेख रूप के साथ कार्य करेगा। इसके साथ-साथ अध्याय और अध्ययन निर्देशिका की रचना सामूहिक अध्ययन में इस्तेमाल किए जाने के लिए की गई है, परन्तु यदि जरुरत हो तो उनका इस्तेमाल व्यक्तिगत अध्ययन के लिए भी किया जा सकता है।

- **इससे पहले कि आप वीडियो देखें**
    - **तैयारी करें** — किसी भी बताए गए पाठन को पूरा करें।
    - **देखने की समय-सारणी बनाएं** — अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय को ऐसे भागों में विभाजित किया गया है जो वीडियो के अनुसार हैं। कोष्ठक में दिए गए समय कोड्स का इस्तेमाल करते हुए निर्धारित करें कि आपको देखने के सत्र को कहाँ शुरू करना है और कहाँ समाप्त। IIIM अध्याय अधिकाधिक रूप में जानकारी से भरे हुए हैं, इसलिए आपको समय-सारणी में अंतराल की आवश्यकता भी होगी। मुख्य विभाजनों पर अंतराल रखे जाने चाहिए।
- **जब आप अध्याय को देख रहे हों**
    - **नोट्स लिखें** — सम्पूर्ण जानकारी में आपके मार्गदर्शन के लिए अध्ययन निर्देशिका के नोट्स के भाग में अध्याय की आधारभूत रूपरेखा रहती है, इसमें हर भाग के आरंभ के समय कोड्स और मुख्य बातें भी रहती हैं। अधिकांश मुख्य विचार पहले ही बता दिए गए हैं, परन्तु इनमें अपने नोट्स अवश्य जोड़ें। आपको इसमें सहायक विवरणों को भी जोड़ना चाहिए जो आपको मुख्य विचारों को याद रखने, उनका वर्णन करने और बचाव करने में सहायता करेंगे।
    - **टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखें —** जब आप वीडियो को देखते हैं तो जो आप सीख रहे हैं उसके बारे में आपके पास टिप्पणियां और/या प्रश्न होंगे। अपनी टिप्पणियों और प्रश्नों को लिखने के लिए इस रिक्त स्थान का प्रयोग करें ताकि आप देखने के सत्र के बाद समूह के साथ इन्हें बाँट सकें।
    - **अध्याय के कुछ हिस्सों को रोकें/पुनः चलाएँ** — अतिरिक्त नोट्स को लिखने, मुश्किल भावों की पुनः समीक्षा के लिए या रुचि की बातों की चर्चा करने के लिए वीडियो के कुछ हिस्सों को रोकना और पुनः चलाना सहायक होगा।
- **वीडियो को देखने के बाद**
    - पुनर्समीक्षा के प्रश्नों को पूरा करें — पुनर्समीक्षा के प्रश्न अध्याय की मूलभूत विषय-वस्तु पर निर्भर होते हैं। आप दिए गए स्थान पर पुनर्समीक्षा के प्रश्नों का उत्तर दें। ये प्रश्न सामूहिक रूप में नहीं बल्कि व्यक्तिगत रूप में पूरे किए जाने चाहिए।
    - उपयोग प्रश्नों के उत्तर दें या उन पर चर्चा करें — उपयोग के प्रश्न अध्याय की विषय-वस्तु को मसीही जीवन, धर्मविज्ञान, और सेवकाई से जोड़ने वाले प्रश्न हैं। उपयोग के प्रश्न लिखित सत्रीय कार्यों के रूप में या सामूहिक चर्चा के रूप में उचित हैं। लिखित सत्रीय कार्यों के लिए यह उचित होगा कि उत्तर एक पृष्ठ से अधिक लम्बे न हों।

© 2013 by Third Millennium Ministries
www.thirdmill.org

नोट्स

I. परिचय (0:26)

II. हम से दूरी (3:16)

जब हम पुराने नियम का अध्ययन करते हैं तो हम पाते हैं कि इसके कई भाग अपरिचित हैं।

A. कारण (4:45)

पुराने नियम की कम से कम दो विशेषताओं के कारण हम अक्सर उसे विदेशी क्षेत्र मानते हैं।

1. जैविक प्रेरणा (6:17)

पवित्र आत्मा ने बाइबल के लेखन में मौलिक मानवीय लेखकों के व्यक्तित्वों, अनुभवों और इच्छाओं का प्रयोग किया।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

परमेश्वर ने सतर्कता से पवित्र वचन की विषय सूची को नियन्त्रित किया ताकि यह त्रुटिरहित हो और वास्तव में परमेश्वर का वचन कहला सके।

2 पतरस 3:15-16 — पौलुस की पत्रियों में परमेश्वर और मानवीय लेखक शामिल हैं।

2. दिव्य समायोजन (9:47)

समायोजन : परमेश्वर जब कभी स्वयं को मनुष्यों पर प्रकट करता है तो वह हर बार नश्वर मानवीय शब्दों में बात करता और प्रकट होता है।

परमेश्वर ने पुराने नियम को उन विशिष्ट ऐतिहासिक परिस्थितियों के लिए भी तैयार किया जिनका प्राचीन पूर्व में रहने वाले यहूदी सामना करते थे।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

B. प्रकार (12:40)

जीवन के धर्मविज्ञानी, सांस्कृतिक, और व्यक्तिगत आयाम एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं और एक-दूसरे को अनगिनत रूपों में प्रभावित करते हैं।

1. धर्मविज्ञानी (14:09)

ऐतिहासिक अन्तर :

- पुराने नियम के लेखकों को प्राप्त प्रकाशन
- मसीहियों को प्राप्त पूर्ण प्रकाशन

2. सांस्कृतिक (16:55)

इनकी संस्कृतियों की जीवन-विशेषताओं के आयाम :

- पात्र
- लेखक
- मूल श्रोता

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

सांस्कृतिक दूरी का कारण है कि मानवीय समाज निरन्तर बदल रहा है।

प्राचीन पूर्व और हमारे आधुनिक संसार के बीच इतनी अधिक भिन्नताएँ हैं कि पुराने नियम में हम जिन बातों को पढ़ते हैं वे अत्यधिक अपरिचित लगती हैं।

3. व्यक्तिगत (20:16)

पुराने नियम के समयों में रहने वाले लोग आधुनिक समय के लोगों से कई रूपों में अलग थे।

III. हमारे लिए प्रासंगिकता (23:13)

पुराना नियम आज हमारे जीवनों के लिए प्रासंगिक है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

मसीह में पूर्ण जीवन को तब तक नहीं पाया जा सकता है जब तक कि हम पुराने नियम से मार्गदर्शन नहीं लेते हैं।

A. यीशु की शिक्षाएँ (24:38)

1. नकारात्मक टिप्पणियाँ (25:02)

यीशु की कुछ शिक्षाएं पहली नजर में पुराने नियम के बारे में एक नकारात्मक विचार को प्रस्तुत करती प्रतीत होती हैं।

यीशु ने पुराने नियम के साथ विरोधाभास नहीं दिखाया। उसने इसकी शिक्षाओं की उन प्रचलित परन्तु गलत धारणाओं का खंडन किया।

उसने अपने समय की गलत व्याख्या का विरोध किया और पुराने नियम की सच्ची शिक्षाओं पर बल दिया।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. सकारात्मक पुष्टियाँ (37:56)

यीशु ने ने अपनी शिक्षाओं के आधार के रूप में निरन्तर पुराने नियम का उल्लेख किया।

पुराने नियम का प्रत्येक विवरण अन्त के समय तक प्रभावी रहेगा।

यीशु ने अपने अनुयायियों से पुराने नियम को परमेश्वर के अधिकृत वचन के रूप में ग्रहण करने को कहा।

B. पौलुस की शिक्षाएँ (41:57)

1. नकारात्मक टिप्पणियाँ (42:27)

दुःखद रूप से, बहुत से मसीही आज विश्वास करते हैं कि पौलुस वास्तव में पुराने नियम के प्रति बहुत नकारात्मक था।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पौलुस का विश्वास था कि नये नियम का विश्वास पूर्ण प्रकाशन था।

पौलुस ने पुराने नियम की प्रासंगिकता का इनकार नहीं किया; उसने केवल पुराने नियम के दुरूपयोग का विरोध किया।

पौलुस ने उनका विरोध किया जो अपने उद्धार के लिए व्यवस्था के पालन पर भरोसा करते थे। उसने उनका विरोध किया जो व्यवस्था के द्वारा धर्मी ठहरना चाहते थे।

पौलुस ने पुराने नियम के द्वारा यह प्रमाणित किया कि उद्धार केवल विश्वास के द्वारा है।

2. सकारात्मक पुष्टियाँ (47:15)

मसीहियों को पुराने नियम को अपने जीवनों के लिए बहुत प्रासंगिक मानना चाहिए।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

IV. हमारे लिए प्रयोग (49:54)

पुराने नियम के अध्ययन और प्रयोग के लिए पवित्र आत्मा की सहायता अत्यावश्यक है।

हमें उत्तरदायित्वपूर्ण तरीकों से पुराने नियम को लागू करना आवश्यक है।

A. चुनौती (51:26)

उस दूरी को सीखना जो हमें पुराने नियम से अलग करती है हमें आज अपने लिए उसकी प्रासंगिकता को पहचानने में सहायता करता है।

आज के लिए पुराने नियम के उचित प्रयोग में उसके मूल अर्थ के अनुसार पुराने नियम की अपनी व्याख्या सम्मिलित होती है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उचित रूप से पुराने नियम को लागू करने के लिए हमें :

- पुराने नियम और हमारे समय के बीच संबंधों को देखना जरुरी है;
- बाइबल-संबंधी विश्वास में हुए विकास के समयों को सावधानी से देखना जरुरी है।

पुराना नियम भावी पीढ़ियों को ध्यान में रखकर लिखा गया था।

B. संबंध (57:12)

हमारे पास पुराने नियम के मूल श्रोताओं के साथ तीन प्राथमिक संबंध हैं।

1. वही परमेश्वर (58:34)

नये नियम के मसीहियों का परमेश्वर वही है जिसके बारे में हम पुराने नियम में पढ़ते हैं।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

"उसी परमेश्वर" की सेवा करने का तथ्य बहुत महत्वपूर्ण संबंधों को स्थापित करता है क्योंकि पवित्र वचन सिखाता है कि परमेश्वर अपरिवर्तनीय या न बदलने वाला है।

- परमेश्वर अनन्त सलाह में अपरिवर्तनीय है।

परमेश्वर की अनन्त योजना हमें सिखाती है कि पुराने नियम में उसके उद्देश्य नये नियम में उद्देश्यों के अनुरूप हैं।

- परमेश्वर अपने स्वभाव या गुणों में भी अपरिवर्तनीय है।

उसका स्वभाव अपरिवर्तनीय है। नये नियम के समय में भी उसके कार्य उसके अनन्त स्वभाव के साथ सामंजस्यपूर्ण हैं।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

- परमेश्वर अपनी वाचा के वायदों में भी अपरिवर्तनीय है। वह उन सब बातों को पूरा करेगा जिसकी उसने अपने लोगों से करने की वाचा बान्धी है।

परमेश्वर ने पुराने नियम के विश्वासियों से बहुत से वायदे किए। नये नियम में वह उन वायदों को पूरा कर रहा है।

2. वही संसार (1:06:58)

पुराना नियम उसी संसार से आता है और उसी संसार का वर्णन करता है जिस में आज आप और मैं रहते हैं।

a. ऐतिहासिक पृष्ठभूमियां

पुराने नियम की घटनाएं और शिक्षाएं नये नियम की घटनाओं और शिक्षाओं की पृष्ठभूमि की रचना करती हैं।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

b. सामानांतर परिस्थितियां

वर्तमान की बहुत सी घटनाएं पुरानी घटनाओं के साथ समानताएं रखती हैं।

सतही असमानताओं से परे हमारी परिस्थितियां बहुत कुछ उनके समान है जिनमें पुराने नियम के लेखक और उनके पाठक रहते थे।

3. उसी प्रकार के लोग (1:10:01)

एक आधारभूत निरन्तरता है जो हमें उन लोगों के साथ जोड़ती है जो पुराने नियम के समयों में रहते थे।

a. परमेश्वर का स्वरूप

सारे मनुष्य परमेश्वर का स्वरूप हैं।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

b. पापी

हम भी पुराने नियम के लोगों के समान हैं क्योंकि सारे मनुष्य पाप में गिरे हुए हैं।

क्योंकि हम परमेश्वर के पतित स्वरूप हैं, इसलिए हम समझ सकते हैं कि किस प्रकार पुराने नियम के लोग परमेश्वर से पाप की ओर मुड़े।

c. विभाजित

पाप में गिरने के बाद से परमेश्वर के साथ अपने संबंध के अनुसार मनुष्य समूहों में विभाजित हैं।

सम्पूर्ण बाइबल में परमेश्वर तीन समूहों की पहचान करता है :

- खोए हुए लोग क्योंकि वे परमेश्वर के साथ की वाचा के बाहर हैं।
- जो परमेश्वर के साथ वाचा में हैं फिर भी खोए हुए हैं।
- जो परमेश्वर के साथ वाचा में हैं और जो विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरे हैं और जिन्होंने अनन्तकालीन उद्धार पाया है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

मानव जाति हमारे समय में उसी प्रकार विभाजित है जिस प्रकार यह पुराने नियम के समय में थी।

C. विकास (1:16:27)

1. युगीय (1:16:57)

परमेश्वर ने स्वयं को युगों या कालों में प्रकट किया है।

हमारे जीवनों में पुराने नियम को लागू करने के संबंध में युगों के प्रकारों पर ध्यान देने के बारे में बहुत अधिक असमंजस है।

a. खण्डित दृष्टिकोण

मसीही पवित्र वचन के विविध युगों या कालों के बीच भिन्नताओं पर बल देते हैं।

आधुनिक विश्वासियों पर पुराने नियम की केवल उन बातों को लागू करने की प्रवृत्ति है जिन्हें नये नियम में दोहराया गया है।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

b. सपाट दृष्टिकोण

उन बातों पर ध्यान केन्द्रित करता है जिनमें पवित्र वचन के विविध युगों के दौरान कोई बदलाव नहीं हुआ है।

मानता है कि जब तक नया नियम कोई बदलाव नहीं करता है, तो पुराने नियम का जितना संभव हो उतनी निकटता से पालन किया जाना चाहिए।

c. विकासशील दृष्टिकोण

बाइबल के इतिहास को एकीकृत और विकासशील दोनों रूपों में देखता है।

सम्पूर्ण पुराना नियम हमारे लिए प्रासंगिक है, परन्तु साथ ही यह भी कि पुराने नियम का प्रत्येक आयाम विकसित हुआ है।

नये नियम की जाँच से गुजरने के द्वारा पुराने नियम की शिक्षाओं को युगीय समायोजनों से गुजरना चाहिए।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

2. सांस्कृतिक (1:23:00)

हमें पुराने नियम में प्रस्तुत संस्कृतियों और हमारे संसार की संस्कृतियों के बीच भिन्नताओं पर ध्यान देना होगा।

जब हम पुराने नियम को आधुनिक जीवन में लागू करते हैं तो हमें पुराने नियम के सन्देश में उचित सांस्कृतिक सामंजस्य बैठाना होगा।

3. निजी/व्यक्तिगत (1:24:03)

पुराने नियम के लोगों और हमारे आधुनिक संसार में रहने वाले लोगों के बीच बहुत सी समानताएँ और भिन्नताएँ हैं। हमें इन निजी बदलावों पर ध्यान देना होगा।

V. उपसंहार (1:25:40)

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

पुनर्समीक्षा के प्रश्न

1. उन दो कारणों को बताइए और वर्णन कीजिए जो हमारे और पुराने नियम के बीच एक दूरी का भाव उत्पन्न करते हैं।

2. उन तीन प्रकार की दूरियों का वर्णन कीजिए जो हम हमारे और पुराने नियम के बीच आम तौर पर पाते हैं।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

3. यीशु की शिक्षा और पुराने नियम की शिक्षा के बीच संबंध को स्पष्ट कीजिए।

4. पौलुस की शिक्षा किस प्रकार पुराने नियम के सतत या निरंतर महत्व की पुष्टि करती है?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

5. आधुनिक संसार में पुराने नियम की प्रासंगिकता के विषय में हमें यीशु और पौलुस की शिक्षाओं से क्या सीखना चाहिए?

6. उस महत्वपूर्ण चुनौती का वर्णन कीजिए जिसका सामना हम पुराने नियम को समझने और हमारे जीवनों में लागू करने में करते हैं।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

7. उन संबंधों का वर्णन कीजिए जो हमारे समकालीन संसार में पुराने नियम की शिक्षाओं को लागू करना हमारे लिए संभव बनाते हैं।

8. उन तीन महत्वपूर्ण विकासों का वर्णन करो जो पुराने नियम के समय और नए नियम के समय के बीच हुए थे।

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org

उपयोग के प्रश्न

1. उस समय के बारे में सोचें जब पुराना नियम आपके लिए विचलित करने वाला था। आपके आरंभिक असमंजस का क्या कारण था?

2. आप उसको कैसे उत्तर देंगें जो कहता है, "हत्या, व्यभिचार और शत्रुओं से प्रेम करने जैसे विषयों पर यीशु की शिक्षा पुराने नियम की शिक्षा की विरोधाभासी है"?

3. पहाड़ी उपदेश में, जो *कहा* गया था और जो *लिखा* गया था उनके बीच यीशु ने निरंतर तुलना क्यों की? किन रूपों में आज के मसीही उन गलतियों को करने को लालायित हो सकते हैं जिनका खंडन यीशु ने किया था?

4. जब आप पुँराने नियम का अध्ययन करते हैं तो परमेश्वर के अपरिवर्तनीय चरित्र को स्वीकार करने से क्या लाभ प्राप्त हो सकते हैं?

5. इस बात को स्मरण करना क्यों सहायक है कि पुराने और नए नियम के लोग समान संसार में रहे थे?

6. इस अध्ययन से आपने कौनसी सबसे महत्वपूर्ण बात सीखी है? क्यों?

© 2008 by Third Millennium Ministries www.thirdmill.org